



CHRIST SENIOR SECONDARY SCHOOL, GUNA



LETTER TO THE PARENTS ON PROJECTS & ACTIVITIES DURING THE SUMMER HOLIDAYS

मेरे प्रिय विद्यार्थियों एवं अभिभावकगण,

क्राइस्ट स्कूल गुना की ओर से शुभकामनाएँ!

विद्यालय विभिन्न परियोजनाओं एवं गतिविधियों आदि के साथ ग्रीष्मकालीन अवकाश की तैयारी में है। हमारे पास लगभग डेढ़ माह का समय है। इन गरमियों की छुट्टियों के लिए मैं आपको तथा आपके बच्चों के लिए कुछ हटकर सुझाव देना चाहता हूँ। इसमें कुछ भी नया तो नहीं है मगर सामान्य से कुछ हटकर जरूर है। यह सबसे सही समय है कि हम अपने दायरे से बाहर आकर सोचें। जैसा कि आप जानते ही हैं कि हम इतिहास के उस द्वार पर खड़े हैं—खासतौर पर नई पीढ़ी, जिनका जीवन की कुछ सच्चाइयों से नाता छूट गया है। निश्चय ही हमें यह तथ्य स्वीकारना होगा कि इसमें उनकी कोई गलती नहीं है। कोविड-19 और उसके बाद की स्थितियों ने जीवन में, लोगों में तथा उसके बाद के हालातों में जबरदस्त बदलाव ला दिए हैं। घटनाओं या हालातों ने समाज में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सबसे ज्यादा असर पड़ा है हमारी नई पीढ़ी पर। क्या यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी नहीं बनती कि हम उन्हें कुछ अलग अनुभव दें और जीवन की सच्चाइयों से परिचित करवाएँ, जिनसे वे वंचित हो गए हैं।

मैं ऐसे कुछ व्यावहारिक सुझाव देना चाहता हूँ जो हमारे दिमागों को झकझोर सकते हैं, पुनः विश्वास और भरोसा कायम करने के लिए जिन्हें हम अपने परिवारों में अभ्यास में ला सकते हैं। परिणामस्वरूप परिवारों में बदलाव आ सकें तथा समाज ऊर्जान्वित हो सके। आइए, चुनौतियों का सामना करने के लिए हम स्वयं को पूरी दृढ़ता तथा ईमानदारी से तैयार करने की कोशिश करें।

1. ऐसा नियम बनाएँ जिसमें दिन का कम से कम दो बार का भोजन—सुबह का नाश्ता और रात का डिनर—बच्चों तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ करें, खासकर छुट्टियों में (बाकी कामकाजी दिनों में कम-से-कम रात का भोजन)। भोजन का समय पारिवारिक रिश्तों को मजबूत करने का अच्छा अवसर होता है। खाने के समय मोबाइलफोन को कम से कम आधे घंटे के लिए दूर ही रखें, इससे एक दूसरे से खुलकर बात करने का मौका मिलेगा। इसके अलावा इस समय हम बच्चों को खाना बर्बाद न करना जैसे जीवन के कुछ महत्वपूर्ण पाठ भी पढ़ा सकते हैं। जब मैं किसी कार्यक्रम में जाता हूँ तो वहाँ खाने की बर्बादी देखकर मुझे बहुत तकलीफ़ होती है। क्यों न हमारे बच्चे अपने परिवारों से ही खाने का सम्मान करना तथा खाना बचाने का सबक प्राप्त करें।

साथ ही वे हमारे 'अन्नदाता' किसानों का धन्यवाद करना भी सीखें, जो हमें जीवन देने के लिए कठिन परिश्रम करतै हैं। आइए हम अपने बच्चों में उपकार मानने तथा कृतज्ञ होने की आदतों को पोषित करें, खासतौर पर उन सभी चीजों के लिए जो जीवन में हमें प्राप्त हुई हैं।

2. अपनी प्लेटें, ग्लास आदि स्वयं धोकर तथा घर के रोज के कामों को करने के लिए प्रेरित कर के हम बड़ी सहजता से उन्हें परिश्रम के महत्व का एक और महत्वपूर्ण पाठ भी पढ़ा सकते हैं। यह इसलिए नहीं कि आप घर के कामों के लिए नौकर नहीं रख सकते बल्कि इसलिए कि वे, जीवन क्या है, यह समझ सकें तथा जीवन की उन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सकें जिनसे जिन्दगी में कभी भी सामना हो सकता है। वे मजबूत, दृढ़ तथा आत्मनिर्भर बन सकें।

इसके अलावा माताएँ भी परिवार का सहयोग प्राप्त कर सकेंगी, जैसे फल-सब्जियाँ धोना, उन्हें काटना, खाने की मेज तैयार तथा साफ़ करना आदि। ये सब भले ही बहुत साधारण या मूर्खातापूर्ण क्यों न लगे लेकिन इन से ही वे जीवन मूल्य मिलते हैं जिनका हमारे बच्चों में होना आवश्यक है। इनसे वे कार्यों का सम्मान करने लगेंगे।

3. एक और पहलू है जिसकी ओर में ध्यान दिलाना चाहूँगा, वह है परिवार के बुर्जुगों—(दादा—दादी, नाना—नानी, चाचा, मामा आदि)—से मिलने जाना तथा उनके साथ सार्थक समय बिताना। इसी तरह अपने पड़ोसियों से भी मिलना—जुलना। ऐसा सुझाव मैं इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि आजकल जीवन बहुत मशीनी होता जा रहा है और हम मानवीय संबंधों का महत्व भूलते जा रहे हैं। हम अपना अधिकांश समय असली दुनिया से कटकर अपनी ही दुनिया में सिमटे रहकर बिताने लगें हैं। अच्छा होगा यदि हमारे बच्चे अपने आस—पास की वास्तविक दुनिया को खुद के अनुभव से जाने तथा मानवीय संबंधों की सराहना तथा सम्मान करना शुरू करें।
4. यदि संभव हो तो आप अपने बच्चों को घरेलू खरीददारी करने के लिए स्थानीय बाजारों में ले जाएँ। आप उन्हें पास के खेतों में भी ले जा सकते हैं, जहाँ कृषिकार्य हो रहे हों, जैसे सब्जियों की खेती। इससे उन्हें जीवन की कठोरता के असली स्वाद और सुगंध का अनुभव होगा।
मैं ये भी सुझाव देना चाहूँगा कि उन्हें अपने ऑफिस या काम करने के स्थान पर लेकर जाएँ, जिससे वे समझ सकें कि आप जीवन को आसान बनाने के लिए किस तरह परिश्रम करते हैं। बच्चे के लिए उसके माता—पिता ही असली हीरो—हिरोइन होते हैं। उन्हें अपने जीवन के सच्चे नायकों से सीखने दें।
5. यदि आप कर सकें तो बच्चों को कुछ ऐतिहासिक स्थानों पर ले जाएँ। ऐसी इतिहास प्रसिद्ध इमारतें, जो ऐतिहासिक या सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं, के माध्यम से उन्हें हमारी महान विरासत और सांस्कृतिक संपन्नता का अनुभव कराएँ। विभिन्न धर्मों के प्रार्थनास्थलों के माध्यम से हमारी मातृभूमि की सांस्कृतिक विविधता व खूबसूरती के साथ—साथ हमारे धर्म निरपेक्ष ताने—बाने की समझ दें।
6. छुट्टियों के दिनों में बच्चों के कुछ शौक, खूबियों या नया सीखने की इच्छाओं को पूरा करने में भी सहायता की जा सकती है, जैसे बगीचे में या गमले में कुछ पौधे लगाना। यदि आप के पास जगह की कमी है तो सार्वजनिक स्थानों पर लगाएँ या फिर कम से कम घर में ऐसे छोटे पौधे जिनकी कोई घर पर ही देख भाल कर सके। अच्छा हो यदि ये अच्छी आदतें उनमें बचपन से ही पोषित की जाएँ जिससे वे बच्चे को धैर्यवान, एकाग्र तथा दृढ़ बनाने में तथा जीवन के लिए जरूरी शिक्षाएँ प्रदान करने में सहायक हों। जिससे वे भविष्य में चीजों की देखभाल बेहतर ढंग से कर सकें।
7. प्रिय अभिभावकगण, किसी भी अन्य चीज की बजाय अपने बच्चे को अपने मूल्यवान समय के कुछ घंटे जरूर प्रदान करें। उनके साथ कुछ समय बिताएँ, उनसे बातचीत करें। संत चावरा कहते हैं—“बच्चे आप को ईश्वर का वरदान हैं, वे आपके हाथों में ईश्वर का निवेश हैं।” वे बच्चे जो ईश्वर से प्रेम करते हैं और ईश्वर से डरते हैं, वे सदा अपने माता—पिता से प्रेम करेंगे तथा सदा उनका सम्मान करेंगे। यही वह चीज है जो हर अभिभावक अपने बच्चे में देखना चाहता है। हर समाज इच्छा करता है, बच्चे गंभीर व्यक्ति, सुरुचिपूर्ण नागरिक के रूप में विकसित हों। इसके अतिरिक्त दयालु तथा बेहतरीन इंसान बनकर परिवार, समाज तथा सबसे बढ़कर देश के लिए अपना योगदान दे सकेंगे। अपना मूल्यवान समय बच्चों को देने से वे एकजुट रहेंगे और परिवार से भी जुड़ाव रखेंगे। पारिवारिक रिश्तों को मजबूत रखेंगे। जिस तरह आज दिन पर दिन पारिवारिक संबंध कमजोर होते जा रहे हैं, यह समय की माँग भी है।
8. बच्चों को उनकी आयु के अनुसार कुछ अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराएँ, जैसे जीवनियाँ, ऐतिहासिक गाथाएँ, प्रेरणादायी कहानियाँ, प्रसिद्ध भाषण आदि। बच्चों को कुछ समय अपने रचनात्मक कार्य करने में बिताने दें। चित्रकारी, पेंटिंग या फिर दूसरी अन्य गतिविधियाँ जिनसे उनका दिमाग ताज़गी महसूस कर सके।
9. मेरा सुझाव है कि यदि हो सके तो प्रतिदिन कुछ घंटे मोबाइल, इंटरनेट, मोबाइलगेम, टी.वी. तथा अन्य सोशल मीडिया माध्यमों से दूरी बनाए रखने का व्रत लें क्योंकि आगे चलकर इन सबसे कोई लाभ नहीं होने वाला। यदि आवश्यकता हो तो भी इन सभी गैजेट्स के इस्तेमाल के समय पर कुछ पाबंदी अवश्य रखें। इन सब की बजाय किताबें पढ़ें, कुछ रचनात्मक कार्य करें,

शौक पूरे करें या जो ऊपर सुझाव दिए गए हैं उनमें अपनी-अपनी रुचि के अनुसार अपने को व्यस्त रखें।

ये कुछ सुझाव हैं जिनसे हम अपने बच्चों को ज्यादा कुशलतापूर्वक तथा प्रभावी ढंग से व्यस्त रख सकते हैं और उन्हें ऐसे बेहतरीन इंसान बनने में सहायता कर सकते हैं जो समाज के लिए ज्यादा अनुकूल होंगे और पारिवारिक रिश्तों को मजबूत रखेंगे। मैं कामना करता हूँ कि आपकी छुट्टियाँ उपयोगी हों, आपका आनेवाला समय सुखद हो। ईश्वर आपका, आपके बच्चों का तथा आपके परिवार का भला करें।

आपका प्रिय,

फ़ा.सेबी एडाटूकारन CMI

प्रधानाचार्य

क्राइस्ट सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, गुना